व्यंग्य

आदर्श का अपहरण उर्फ़ ढेंचू-ढेंचू

गधाध्यक्ष ने जोर से ढेंचू-ढेंचू करने वाले विश्वस्त गधों को साथ लिया और जी जान से अश्वादर्श की तलाश में जुट गए। कई दिनों की तलाश के बाद उनकी तपस्या सफल हुई। उन्हें अश्वादर्श के लिए अपहरण का मार्ग ही सर्वाधिक उपयुक्त लगा। प्रसन्नवदन ढेंचू-ढेंचू करते गधाध्यक्षजी वैसाखनंदनजी के समक्ष उपस्थित हुए। आकर नए सिरे से पुनः ढेंचू-ढेंचू करना शुरू किया। वैसाखनंदन ने भी ढेंचू-ढेंचू कर गधाध्यक्ष का अभिवादन किया। अपनी खोज के बारे में जानकारी दी। कुतूहलवश वैसाखनंदन ने ढेंचू-ढेंचू किया, बगल में घोरा नगर में ढिंढोरा

-शशि कुमार सिंह

जंगल में लोकतंत्र की बहाली की कोशिशें चरम पर थीं। गधों ने जंगल में ढेंचू-ढेंचू करना शुरू किया.गधों ने घोड़ों पर आरोप लगाये कि कैसे उन्होंने जंगल की सारी घास बेच दी। जानवरों ने सर्वाधिक धूर्त गधे को राजा चुन लिया। अब गधे का नया नामकरण हो गया, 'वैसाखनंदन' यह दूसरी बार हुआ था कि किसी गधे को जंगल का राजा चुना गया था। लोकतंत्र अब सफल हो गया था। वैसाखनंदन मन ही मन महसूस करते थे कि हम गधे हैं। उन्हें अपने गधा होने पर अफ़सोस होता। उनके मन की सुप्त इच्छा थी कि लोग उन्हें अश्व मानें। अश्व दिखने के लिए उन्होंने कोशिशें भी कम नहीं कीं। अश्वों का पहनावा भी अपनाया। हिनहिनाने की प्रैक्टिस भी की.मगर पोल खुल जाती। कुछ जानवर कहते कि यह ढेंचू-ढेंचू है। मगर गधे अन्य जानवरों की श्रवण-शक्ति पर संदेह करते।

वैसाखनंदन ने बहुत सोच-समझकर अश्वादर्श स्थापित करने की योजना बनायी। उन्होंने अश्वादर्श पद के लिए गधों को एक सिरे से खारिज कर दिया। वैसाखनन्दन मन ही मन बुजुर्ग और दिवंगत गधों की औकात से परिचित थे। जब वैसाखनंदन के निर्देश पर अश्वादर्श की खोज शुरू हुई तो उड़ती हुई खबर बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज के कानों तक पहुँची।

बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज ने ढेंचू-ढेंचू किया, ''मैंने बहुत ढेंचू-ढेंचू करके गधों को इकठ्ठा किया और जब राजा बनने की बारी आई तो तुम लोगों ने मेरी गत धोबी के कुत्ते की तरह कर दी। कम से कम मुझे आदर्श तो घोषित कर सकते हो। नाम तत्सम रख देने से कोई अश्व नहीं हो जाता। मुझे अश्वादर्श घोषित करो।''

''चुप होते हो कि बदतमीजी करोगे? इस जंगल में कोई भी मेरी मर्जी के बगैर ढेंचू-ढेंचू नहीं कर सकता। तुम्हारे सींग उग आयी है बुढौती में? कब से ढेंचू-ढेंचू किये जा रहे हो। और सुनो हम लोग अश्वादर्श खोज रहे हैं गर्दभादर्श नहीं।'' वैसाखनंदन ने बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज को जोर की फटकार लगाई।

''तुम मेरा सम्मान नहीं कर रहे हो।'' बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज ने ढेंचू-ढेंचू कर प्रतिवाद दर्ज कराया।

''तुम्हारे साथ कौन रहेगा, तुम्हारा गधाधार कितना है? आज तुम गधों को इकट्ठा करके दिखाओ। तुम्हारा ढेंचू-ढेंचू कोई सुनना भी पसंद नहीं करता। मैं भी देखूं तुम्हारे कहने पर कितने गधे लोटने के लिए तैयार होते हैं।'' वैशाखन्दन ने बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज को डांट दिया। बेचारे बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज का लटका हुआ थूथन और भी लटक गया.उन्होंने मौन साध लिया।

वैसाखनन्दन ने अपना ढेंचू-ढेंचू जारी रखा, ''हम ऐसा अश्वादर्श खोज रहे हैं जिसके साथ अन्याय हुआ हो।''

''अन्याय तो मेरे साथ भी हुआ है।'' बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज ने पुनः ढेंचू-ढेंचू किया।

''तुम तो हमारे खेमे के ही हो। तुम्हें तो हम गधे ढो ही रहे हैं। मैं दूसरे खेमे की बात कर रहा हूँ। तुम्हारे साथ क्या अन्याय हुआ है? तुम अपने को नए ज़माने के अनुसार अपडेट नहीं कर पाए। सिर्फ गधों के जुलूस से ही तुम राजा बन सकते हो? कितने खच्चरों को तुमने मौत के घाट उतारा?''

बेचारे बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज का लटका हुआ थूथन अब और भी ज्यादा लटक गया और उन्होंने कुछ समय तक ढेंचू-ढेंचू न करने का निर्णय लिया।

वैसाखनंदन ने ढेंचू-ढेंचू कर गधाध्यक्ष को बुलाया और अपनी मंशा जाहिर की। गधाध्यक्ष ने ढेंचू-ढेंचू किया, ''आपने मेरे ऊपर विश्वास जताया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। वैसे तो मैं जिन्दा घोड़े खरीदने का एक्सपर्ट हूँ। घोड़े तो मुझसे कांपते हैं। साम, दाम, दंड, भेद सारे फार्मूले मुझे पता हैं। हे वैसाखनंदन! किसी भी उपाय से मैं अश्वादर्श उपस्थित करूंगा। मैं जब तक वैसाखनंदन का यह सत्कार्य संपन्न नहीं कर लेता, मैं कदापि विश्राम नहीं करूंगा। क्योंकि मैं वैसाखनंदनजी का भक्त हूँ और मर्कटराजजी सेवक धर्म में मेरे प्रेरणा स्रोत हैं।''

गधाध्यक्ष ने जोर से ढेंचू-ढेंचू करने वाले कुछ विश्वस्त गधों को साथ लिया और जी जान से अश्वादर्श की तलाश में जुट गए। कई दिनों की तलाश के बाद उनकी तपस्या सफल हुई। उन्हें अश्वादर्श के लिए अपहरण का मार्ग ही सर्वाधिक उपयुक्त लगा। प्रसन्नवदन ढेंचू-ढेंचू करते गधाध्यक्षजी वैसाखनंदनजी के समक्ष उपस्थित हुए.आकर नए सिरे से पुनः ढेंचू-ढेंचू करना शुरू किया। वैसाखनंदन ने भी ढेंचू-ढेंचू कर गधाध्यक्ष का अभिवादन किया। अपनी खोज के बारे में जानकारी दी। कुतूहलवश वैसाखनंदन ने ढेंचू-ढेंचू किया, ''बगल में घोरा नगर में ढिंढोरा''

यह सुनकर बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज प्रसन्न हुए, और मारे खुशी के फूले नहीं समा रहे थे। आखिर ढेंचू-ढेंचू कर ही दिया, ''बहुत हुत धन्यवाद आप लोगों का।''

''किस बात का?'' वैसाखनंदन ने ढेंचू-ढेंचू कर प्रश्न किया।

''आप लोगों की ढेंचू-ढेंचू मैंने सुन ली थी।'' बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज ने ढेंचू-ढेंचू किया।

यह ढेंचू-ढेंचू सुन वैसाखनंदन, गधाध्यक्ष और उनके विश्वस्त गर्दभों ने ढेंचू-ढेंचू कर बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज के गर्दभपने की खिल्ली उड़ाई। बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज को दोनों के ढेंचू-ढेंचू की जानकारी हुई तो उन्होंने अत्यंत क्षीण स्वर में ढेंचू-ढेंचू किया, ''तुम लोग ऐसे अश्व को अश्वादर्श पद पर स्थापित कर रहे हो जिसने कि गर्दभ-समूह पर पाबंदी लगाई थी। जब तक वह यदि रहा हम गर्दभों को उसने कितना तंग किया। तुम लोगों को पता भी है कि उस अश्व ने हम गर्दभों को घास के तिनके-तिनके का मोहताज कर दिया था। हमें लेटने तक के लिए भी जमीन नहीं मिलती थी। और तुम लोग उस अश्व के प्रति सम्मान प्रकट कर रहे हो? उस संघर्ष का साक्षी मैं हूँ। सिर्फ अकेला मैं। और तुम लोग उसे सिर्फ इसलिए अश्वादर्श के पद पर स्थापित कर रहे हो कि वह उसी कच्छ भूमि का है, जहां के हम सब गधे हैं।''

''तुम इससे अलग कुछ ढेंचू-ढेंचू कर भी नहीं सकते। अगर कर सकते तो आज तुम जंगल के राजा होते। '' गधाध्यक्ष ने ढेंचू-ढेंचू किया।

वैसाखनंदन ने ढेंचू-ढेंचू कर सफाई दी, ''ऐसा थोड़ी है कि हम उसे अश्वादर्श मानते हैं। हमने आपसे ही यह हुनर सीखा है गर्दभगुरु। मैं भी खून के घूँट पी रहा हूँ। मगर हमें गर्दभहित और अश्वों के चारित्रिक हनन के लिए अपनी आत्मा का हनन करना होगा.यह गर्दभ हित का विराट अनुष्ठान है। हमें बड़े शत्रु को पराजित करने के लिए छोटे शत्रु को मित्र मानना पड़ेगा।''

अपना पत्ता कटता देख बुजुर्ग पूर्व गर्दभ राज ने गर्दभों की मशहूर ढेंचू-ढेंचू से अलग राग अलापा, ''कौन है तुम्हारा शत्रु?''

''हमारे शत्रु अश्वराज और उनके वंशज हैं। '' गधाध्यक्ष ने अति उत्साह में ढेंचू-ढेंचू किया।

''क्यों, क्या दुश्मनी है?''

''ये आप पूछ रहे हैं? जैसे आप कुछ जानते ही नहीं। इतना गधापन ठीक नहीं। उन्होंने धोबियों को इस देश से बाहर खदेड़ा। धोबी हमें कितना मानते थे। '' वैसाखनंदन ने ढेंचू-ढेंचू किया।

''और?''

''और क्या ?''

''उन्होंने खच्चरों को यहीं रोक लिया।'' गधाध्यक्ष ने भी ढेंचू-ढेंचू किया।

''वे खच्चर नहीं है.वे भी घोड़े हैं। '' बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज ने डरते-डरते ढेंचू-ढेंचू किया।

''तो क्या हो गया? ये हमारे बुजुर्ग गर्दभों ने ही कहा है। अब बुढ़ापे में आपका हृदय परिवर्तन हो रहा है, तो यह हमारी जिम्मेदारी नहीं है। '' वैसाख नंदन ने दहाड़ने के स्वर में ढेंचू-ढेंचू किया मगर दहाड़ने के लोभ में उनका ढेंचू-ढेंचू और भी बेसुरा हो गया था।

''यह जंगल हम गधों का है। घोड़ों और खच्चरों का नहीं। हम यहाँ के मूल निवासी हैं। ये घोड़े और खच्चर बाहरी हैं। घुसपैठिये हैं.जंगलद्रोही हैं। '' यह ढेंचू-ढेंचू गधाध्यक्ष का था।

''उस अश्वादर्श ने हमारे साथ जो किया हम उसका बदला तो उससे जरूर लेंगे ही मगर यह समय आपसी संघर्ष का नहीं हैं। हमें धैर्य से काम लेने की जरूरत है। इस समय हमें यह महसूस करने की जरूरत है कि उस अश्वादर्श के साथ अन्याय हुआ है। अश्वराज ने उन्हें वह सम्मान नहीं दिया जिसके वे अधिकारी थे। हम इस अन्याय को बर्दाश्त नहीं करेंगे। हमारे गधे जंगल के कोने-कोने को इस बात से अवगत करायेंगे। हम इस अन्याय केखिलाफ ''ढेंचू-ढेंचू यात्रा'' आरम्भ करेंगे.वैसाखनंदन ने ढेंचू-ढेंचू कर धर्मयुद्ध का बिगुल बजा दिया।

वैसाखनंदन सभा करते। खूब ढेंचू-ढेंचू करते। उनकी देखादेखी गधे भी ढेंचू-ढेंचू कर जंगल को यकीन दिलाने की कोशिश करते कि अश्वादर्श के साथ वाकई अन्याय हुआ था। जंगल के जानवरों ने यह विश्वास कर लिया कि वाकई उस अश्वादर्श के साथ अन्याय हुआ था। और यह भी यकीन करने की कोशिश करने लगे कि वे कोई अश्व नहीं थे क्योंकि अश्व तो जंगलद्रोही थे। वे तो जंगलभक्त थे। वे सही शत्रु की शिनाख्त ही न कर सके। जंगल के शत्रु खच्चर थे। मगर ये अश्व धोबियों को शत्रु मान बैठे थे और हिनहिना-हिनहिना कर धोबियों को जंगल से खदेड़ दिया। धोबियों के चले जाने से अश्व राजा बन गए। तो अश्वादर्श भी मूलतः गधे ही थे और बिछड़कर अश्वों की टोली में शामिल हो गए थे। और इस तरह यह भी साबित करने में गधे धीरे-धीरे सफल होने की कोशिश कर रहे थे कि धोबियों को भगाने में गधों ने भी भूमिका निभाई थी। पर जंगल ही नहीं गधों को भी यह एहसास था कि लाख रंग-रोगन के बाद भी गधे तो गधे ही रहेंगे, वे घोड़े तो नहीं ही बन सकते।

वैसाखनंदन ने उस अश्वादर्श को सम्मान देने के लिए समूचे जंगल को दौड़ा दिया। वैसाखनंदन से किसी ने कह दिया था कि दौड़ने से सम्मान ही नहीं बढ़ता, जंगल में एकता भी स्थापित होती है और जानवरों की सोचने-समझने की शक्ति पर भी असर पड़ता है। समूचा जंगल दौड़ने लगा। लादी ढोने वाले गधे सबसे आगे होते.इस दौड़ से अश्वादर्श का सम्मान तेजी से बढ़ने लगा। जंगल में आश्चर्यकारी एकता स्थापित हुई। और जानवरों की सोचने समझने की शक्ति पर भी असर महसूस किया गया। इस दौड़ के बाद जंगल में जानवर अश्वादर्श के साथ हुए अन्याय पर डिबेट करते पाए गए। पर हर डिबेट ढेंचू-ढेंचू की कर्णप्रिय ध्वनि के साथ संपन्न होती।

एक सभा में एक सियार ने पूछ ही लिया, 'ये बताइये वैसाखनंदनजी कि बुजर्ग पूर्व गर्दभराजजी के अपमान के बारे में आपके क्या विचार हैं और धोबियों को जंगल से खदेड़ने में गधे क्यों शामिल नहीं हुए?' वैसे तो वैसाखनंदन खुद को गधा मानते थे पर सियारों के मुंह से गधा शब्द सुनना उन्हें अपमानजनक लगा। क्रोध में उन्होंने जोर से ढेंचू-ढेंचू करना शुरू किया ताकि उसमें सियार की आवाज़ अनसुनी हो जाए। और सचमुच बात आई गयी हो गयी। वैसाख नंदन के विश्वस्त गधे सियार को पकड़कर सभा से बाहर ले गए। आज गधों के ढेंचू-ढेंचू से पूरा जंगल पुलकित है। सियारों और घोड़ो की बात कोई सुनने के लिए तैयार नहीं। कुछ घोड़ों को खच्चर घोषित कर उनके डी.एन.ए.पर ही प्रश्न चिह्न लगा दिया गया है। बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज भी वैसाखनंदन और गधाध्यक्ष की सफलता का मौन निरीक्षण कर रहे हैं। जंगल के कच्छ प्रदेश से वैसाखनंदन की ढेंचू-ढेंचू की आवाज़ आ रही थी। बुजुर्ग पूर्व गर्दभराज ने दोनों हाथों से अपने कान बंद कर लिए। पेड़ के नीचे बैठे-बैठे उन्हें उसी कच्छ प्रदेश के एक चौथे घोड़े की बेतरह याद आ रही थी। और उन्हें यह भी याद आ रहा था कि कैसे उस घोड़े की हत्या पर गधे खुशी के मारे ढेंचू-ढेंचू कर रहे थे। बुजुर्ग पूर्व गर्दभ राज की आँखों से आंसू की बूँदें टपक पड़ीं और दूर हिम प्रदेश से वैसाखनंदन का ढेंचू-ढेंचू सुनाई पड़ रहा था, ''अश्वादर्श के साथ अन्याय हुआ है।''

बीजेपी/कांग्रेस विकल्प नहीं, पूंजीवादी वर्ग के दो चेहरे

- मुकेश असीम

इस विचार पर कई साथियों का ऐतराज है कि इसमें ऐतिहासिक दृष्टि और रणनीतिक समझ का अभाव है।

मुझे समझ आया कि उनके नजरिये से फासीवादी बीजेपी को रोकने के लिए कांग्रेस का साथ जरुरी है इसलिए मौजूदा वक़्त में उसके जुर्मों को नजरअंदाज करना वांछनीय है।

मुझे लगता है कि इन साथियों की समझ से फासीवादी उभार पूरे पूंजीपति वर्ग का नहीं बल्कि एक पार्टी विशेष का उभार है, जो एक गलत विचार है। फासीवादी उभार मुख्यत: विशेष ऐतिहासिक घड़ियों (पहले 1920 के दशक, फिर 1980 के दशक से आगे) में ही क्यों उफान पर पहुंचने शुरू हुए, इसके विशेष कारणों को जानना जरुरी है, जैसे भारत में संघ 1925 से निरंतर हाशिये पर जुटे होने पर भी 80 के दशक में ही क्यों एक सामाजिक ताकत बना, इसका कारण संघ के विचार में ही नहीं भारत की वस्तुगत आर्थिक-राजनीतिक स्थितियों में है और उसे जाने बग़ैर इसके बारे में कोई ऐतिहासिक दृष्टि की बात करना तर्कपूर्ण नहीं।

फ़ासीवाद असल में पूंजीपति वर्ग के इस भय से जन्म लेता है कि उसके आर्थिक संकट और नतीजन नग्न जनविरोधी आर्थिक नीतियों से जन्मा असंतोष उसके विरुद्ध एक जनउभाड़ पैदा कर सकता है। इस भय से वह इसके पहले ही इसके विरोध में राष्ट्र, धर्म, जाति, इलाका, नस्ल, आदि के छद्म अंध गौरव, उस गौरव को कुछ खास दुश्मनों से खतरे और उन दुश्मनों को मिटा डालने के उग्र मतान्ध विचार आधारित प्रति-उभाड़ को खड़ा करता है। यद्यपि इसमें सामने कुछ अतार्किक, हठी, उग्र, बड़बोले, मूर्ख, फेंकू लगने वाले लोग होते हैं लेकिन इसके पीछे असली योजना, दिमाग और धन/प्रचार बल ठंडे, शातिर दिमाग वित्तीय पूंजीपतियों, उनके प्रबंधकों और भाड़े के करियरिस्ट बुद्धिजीवियों का होता है। 1920 के दशक के फासीवादी उभार पूरे यूरोप में अक्टूबर क्रांति से प्रेरित मजदूर वर्ग आंदोलनों और क्रांतियों का भय था। इसी तरह द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की विशेष परिस्थिति के अस्थाई विकास के दौर के 1970 के दशक में संकटग्रस्त पूंजीवाद ने जैसे ही नवउदारवादी नीतियों को लागू करना शुरू किया उसके सामने फिर से असंतोष और मजदूर वर्ग आंदोलनों का भय खड़ा हो गया। इसलिए 80 के दशक में पूंजीपति वर्ग ने अपने धन और मीडिया बल से फासीवादी विचार को फिर से खड़ा करना शुरू किया। सब समस्याओं को सुलझा देने, सख्त फैसले ले सकने वाले सशक्त नेताओं (इंदिरा, थैचर, रीगन, आदि) का विचार भी यहीं से खड़ा करना आरंभ हुआ।

भारत में भी यह कतई गलत समझ है कि नवउदारवादी नीतियां 1991 में राव-मनमोहन ने शुरू कीं। अनुभवी-अध्ययनशील मित्र याद करें कि भारत में नवउदारवादी नीतियां (बाजार शक्तियों को बढ़ावा, निजीकरण, अमीरों को आय-संपत्ति-कॉर्पोरेट करों में कमी, शिक्षा-चिकित्सा का व्यवसायीकरण, सब्सिडी में कमी, नियंत्रित कीमतों में वृद्धि, कल्याण योजनाओं में कटौती, विदेशी निवेश को प्रोत्साहन, वगैरह) 1981 के आईएमएफ कर्ज की शर्तों के साथ शुरू हुईं थीं। 1982, 83 के बजट के बारे में पढ़ें। इनकी अगली बड़ी किश्त थी राजीव गांधी के वित्त मंत्री वीपी सिंह के पूंजीपति वर्ग द्वारा 'क्रांतिकारी' करार दिए गए 1985 और 1986 के बजट जिनके नतीजे में ही कॉर्पोरेट मीडिया ने वीपी सिंह को अपना प्रिय विकल्प बनाकर खड़ा किया था।

ठीक यही वह वक्त था जब इंदिरा गांधी ने हिंदुत्व का दामन पकड़ा, संघ के साथ दोस्ती बनाई, विहिप को पुनर्जीवित किया, पंजाब, असम, श्रीलंका-तमिलनाडु में कट्टरपंथी समूहों को खड़ा किया और इनके बल पर सत्ता तंत्र (कानूनों, अर्धसैनिक बलों, पुलिस) की मजबूत जकड़बंदी खड़ी करनी शुरू की, कमिटेड (भक्त?) अफसरशाही-मीडिया-न्यायपालिका-शिक्षातंत्र को बढ़ावा दिया। बाकी पिछली पोस्ट की बातों को दोहराना नहीं चाहता।

पर यही भारत में फासीवादी उभार का शुरुआती चरण था। उसके बाद सरकारें बदलती रही हैं लेकिन कमोबेश किसी ने थोड़े धीमे, किसी ने तेज, किसी ने बेशर्म-नग्न तरीके से, तो किसी ने शातिराना ढंग से इन नीतियों की निरंतरता को बनाये रखा है। क्या कोई मुझे बताएगा कि किस सरकार ने इस दिशा को बदलने का प्रयास किया? असल में हिटलर-मुसोलिनी के नग्न फासीवाद से पूंजीपति वर्ग ने भी सबक लिया है और अभी वह ज्यादा चालाकी से इसे आगे बढ़ा रहा है जिससे बहुत से प्रगतिशील-जनवादी-वामपंथी विचार के लोग भी भ्रमित होकर इसके छिपे-शातिराना रूप को ही फासीवाद का विकल्प मानने लगे हैं। उनकी नजर में फासीवादी उभार पूंजीपति वर्ग का नहीं सिर्फ संघ-बीजेपी-नरेंद्र मोदी का उभार है और पूंजीपति वर्ग का एक 'अच्छा, भला' हिस्सा इसके खिलाफ लड़ने में उनकी मदद करने वाला है। यह कतई गलत विचार है क्योंकि इस विश्वव्यापी गहन संकट के दौर में फासीवाद पूरे पूंजीपति वर्ग का विचार है इसलिए दुनिया भर में जो विकल्प खड़े हो रहे हैं वो एक तरफ कुंआ, दूसरी तरफ खाई वाले विकल्प हैं, वास्तविक विकल्प नहीं।

लेकिन इस भ्रम का नतीजा क्या है?

फासीवादी विचार के खिलाफ तार्किक, के बजाय फासीवाद के दो चेहरों में से एक को अपना साथी मान लेने का अफसोसनाक नतीजा है कि पूरा जनवादी-वामपंथी पक्ष ही आम लोगों की नजर में भरोसे लायक नहीं रहा क्योंकि आज के किसी भी फासीवादी हमले का विरोध करने पर उसके ऊपर ही सवाल खड़ा हो जाता है कि दूसरे पक्ष के ठीक इसी काम की हिमायत आप कैसे कर सकते हैं? जब दूसरा पक्ष जनता के हितों पर घातक हमले कर रहा था तब आप उसके साथ क्यों खड़े थे? एक ही किस्म के फैसले का एक वक्त में समर्थन और दूसरे वक्त विरोध कौन सी नैतिकता है? इसके विपरीत एक तार्किक, सैद्धांतिक, नीतिगत अवस्थिति लेने पर कुछ समय के लिए महसूस हो सकता है कि हम अलग-थलग पड़े हैं लेकिन वह आगे चलकर आम मेहनतकश लोगों में इस सही अवस्थिति पर भरोसा कायम कर एक वास्तविक विकल्प खड़ा करने का आधार बनेगा।